शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 54/2 | अप्रैल-जून 2021 | 300.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय

हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फोन : 01342-263232, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ० मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन०सी०आर०
डॉ० अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ० मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ० शंकर क्षेम

उपसंपादक
डॉ० अशोककुमार
डॉ० कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ० अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०

शुल्क

आजीवन (दस वर्ष): व्यक्तिगत : पाँच हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : आठ सौ रुपए
यह प्रति : तीन सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

परामर्श-मंडल

डॉ॰ सुधा ओम ढींगरा, 101, Guymon Court, MorrisVille, NC-27560 USA
डॉ॰ सुरेशचंद्र शुक्ल, अध्यक्ष इंडो-नार्वेजियन सूचना एवं सांस्कृतिक मंच
प्रो॰ हरिमोहन, कुलपति, जे॰एस॰ विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद (फिरोजाबाद) उ॰प्र॰
डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका, ए-98, अशोक विहार फ़ेज-1, दिल्ली 110052
प्रो॰ अशोक चक्रधर, जे-116, सरिता विहार, नई दिल्ली
श्री अनिल शर्मा जोशी, उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (उ॰प्र॰)
प्रो॰ पूरनचंद टंडन, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ॰ एस॰के॰ पवार, प्रोफेसर व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ 580003 (कर्नाटक)
प्रो॰ नंदकिशोर पांडेय, हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज॰)
प्रो॰ आदित्य प्रचंडिया, पूर्व आचार्य हिंदी विभाग, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग, आगरा
प्रो॰ बाबूराम, पूर्व अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, चौ॰ बंशीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी (हरियाणा)
डॉ॰ राजेंद्र मिश्र, 14/4 स्नेहलता गंज, इंदौर 452003 (म॰प्र॰)
प्रो॰ हरिमोहन बुधौलिया, पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष हिंदी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
प्रो॰ आनंदप्रकाश त्रिपाठी, अध्यक्ष हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ॰ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
प्रो॰ अर्जुन चव्हाण, प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महा॰)
डॉ॰ माया टाक, पूर्व प्रोफ़ेसर संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज॰)
प्रो॰ अनिलकुमार जैन, पूर्व प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज॰)
प्रो॰ डॉ॰ सदानंद भौसले, अध्यक्ष हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे (महा॰)
प्रो॰ शंभुनाथ तिवारी, हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उ॰प्र॰)
डॉ॰ योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण', (पूर्व प्राचार्य) 74/3 नया नेहरूनगर, रुड़की (उत्तराखंड)
डॉ॰ अवनिजेश अवस्थी, हिंदी विभाग, पी॰जी॰ डी॰ए॰वी॰ कालेज, नेहरू नगर, नई दिल्ली
डॉ॰ अरुणकुमार भगत, अध्यक्ष, मीडिया अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी
प्रो॰ मंजुला राणा, अध्यक्ष हिंदी विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर
प्रो॰ हनुमानप्रसाद शुक्ल, हिंदी विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
प्रो॰ चंद्रकांत मिसाल, प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग, एस॰एन॰डी॰टी॰ महिला विद्यापीठ, पुणे (महा॰)
डॉ॰ मुकेश गर्ग, पूर्व एसोसिएट प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
प्रो॰ जितेंद्र वत्स, प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया (बिहार)
डॉ॰ माला मिश्रा, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, अदिति कालेज (दिल्ली विश्व॰), बवाना
डॉ॰ दिनेशकुमार चौबे, हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग (मेघालय)
डॉ॰ शहाबुद्दीन शेख़, प्राचार्य, लोकसेवा कला व विज्ञान महा॰, औरंगाबाद (महा॰)
डॉ॰ महेशचंद्र, पूर्व एसोसिएट प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ (उ॰प्र॰)
श्री राकेशकुमार दुबे, पत्रकारिता और जनसंचार विभाग, उड़ीसा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट (उड़ीसा)
डॉ॰ महेश दिवाकर, अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी साहित्य एवं कला मंच, मुरादाबाद (उ॰प्र॰)

 ISSN 0975-735X

अनुक्रम

लोकगीतों में नायिका-भेद वर्णन/ **डॉ॰ सुमन सिंह** 9

किन्नरों की आर्थिक, शिक्षा एवं स्वास्थ्य-संबंधी समस्या 'पोस्ट बॉक्स नं॰ 203 नाला सोपारा' के संदर्भ में/ **डॉ॰ महेंद्र रघुवंशी** 16

मृणाल पांडेय के कथासाहित्य में राजनीतिक नारी मनोविज्ञान/ **डॉ॰ संजय विक्रम ढोडरे** 19

इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की हिंदी ग़ज़ल में स्त्री-समानता का प्रश्न/ **डॉ॰ राजेश कुमार** 24

बलदेव वंशी के काव्य में चित्रित देश-विभाजन की त्रासदी/ **प्रा॰ सुनील लक्ष्मण वळवी** 30

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल का बहुरंगी और समृद्ध नाटक-संसार/ **डॉ॰ शकुंतला कालरा** 34

अरुणाचल प्रदेश स्थित न्यिशी जनजाति की लोककथाओं की विशेषताएँ/ **डॉ॰ जोराम आनिया ताना** 43

पुरुषवादी सामाजिक वर्जनाएँ एवं नैतिकता के बदलते मानदंड : 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक'/ **मीनू भाटी, डॉ॰ बीना शर्मा** 51

ब्रज साहित्यिक रचनाओं में इतिहासबोध : केशवदास के ऐतिहासिक काव्य के संदर्भ में/ **डॉ॰ राकेश कुमार** 61

रजनी गुप्त का 'कितने कठघरे' और मैत्रेयी पुष्पा का 'गुनाह-बेगुनाह' का तुलनात्मक अध्ययन/ **फराह जमील, डॉ॰ रूबी जुत्शी** 67

ज्ञानप्रकाश विवेक के उपन्यासों में पारिवारिक विघटन/ **सुमन मलिक, डॉ॰ राजिन्द्र पाल सिंह 'जोश'** 71

समकालीन कथासाहित्य में कमलेश्वर का समाजबोध/ **ममता चंडावला** 78

लैंगिक समानता और समावेशी शिक्षा : एक सामाजिक विश्लेषण (नवीन शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में)/ **इंदिरा, डॉ॰ विमलेश शर्मा** 83

सूरजसिंह नेगी के कथासाहित्य में अभिव्यक्त वृद्ध जीवन/ **पूजा** 89

निरालाकृत 'तुलसीदास' का काव्यसौंदर्य/ **डॉ॰ अनीता अग्रवाल** 93

गोविंद मिश्र एवं उनका रचना-संसार/ **कु॰ गीता, डॉ॰ स्वर्णलता कर्दम** 100

समकालीन हिंदी कविता में संवेदना एवं सरोकार/ **डॉ॰ अंजू** 107

रूपसिंह चंदेल के उपन्यासों में स्त्रीजीवन का यथार्थ/ **संगीता** 115

पचासोत्तर भारतीय रंग-आंदोलन एवं महिला रंगकर्मियों की भूमिका : हिंदी तथा मलयालम के विशेष संदर्भ में/ **डॉ॰ अपर्णा वेणु** 119

कविवर हरमहेंद्र सिंह बेदी और उनका काव्याकाश/ **तनु भारद्वाज** 123

मंजुल भगत की कहानियों में नारी-दशा/ **सुनिता यादव** 129

 ISSN 0975-735X

निरुपमा बरगोहाई और मृदुला गर्ग के उपन्यासों में नारीवाद/ **सुमि शर्मा** 132
नरेंद्र कोहली एवं उनकी साहित्य-साधना/ **प्रतिभा** 139
असम की राभा जनजाति : एक अवलोकन/ **डॉ॰ राजकुमारी दास** 151
आधारभूत संरचना के विकास में बजट 2021 का योगदान/ **डॉ॰ राजेंद्र कुमार** 155
मानवाधिकार का अर्थ एवं महत्त्व/ **पूजा कुमारी** 161
मार्कण्डेय की कहानियों में ग्रामीण स्त्री का संघर्ष/ **डॉ॰ बिजेन्द्र कुमार** 165
ज्ञानप्रकाश विवेक के साहित्य में आधुनिक युगबोध/
नीरू रानी, डॉ॰ कामराज सिंधु 171
बालश्रम और कानूनी अधिकार/ **वंदना** 174
बौद्ध पालि साहित्य में वर्णित महात्मा बुद्ध का कृषिविषयक दृष्टिकोण/
डॉ॰ प्रशांत कुमार, डॉ॰ अजीत कुमार राव 177
मानवीय चेतना पर दस्तक देते कुसुम अंसल के नारीपात्र/
डॉ॰ विक्रम सिंह, डॉ॰ सुनीता 183
धरती से जुड़े कवि : भगवतीलाल व्यास/ **डॉ॰ नीतू परिहार** 187
अलका सरावगी के कथासाहित्य में सामाजिक परिदृश्य/ **दिनेशचंद्र भट्ट** 192
परिसर बादशाहीथौल टिहरी परिसर, गढ़वाल/ **प्रो॰ कुसुम डोभाल मिश्र** 192
प्रसाद के नाटकों के पात्रों में अंतर्द्वंद्व/ **डॉ॰ वीना सोनी** 196
कोविड-19 के दौरान ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की चुनौतियाँ एवं समाधान/
अशोक कुमार, डॉ॰ सुधीर मलिक 202
लघुकथाओं का सुंदर गुलदस्ता : आस्था के फूल/ **प्रो॰ नीरू** 206
मुरैना के ककनमठ मंदिर में अंकित दिक्पाल देवता इंद्र का प्रतिमाशास्त्रीय स्वरूप/
गौरव सिंह, प्रो॰ प्रभात कुमार 211
श्रीकृष्णचंद्रिका : एक अद्भुत रचना/ **डॉ॰ निर्भय शर्मा** 216
संत कबीर का समाजदर्शन/ **डॉ॰ लक्ष्मी गुप्ता** 221
भारतीय धर्म (संस्कृति) और अंबेडकर की दृष्टि/ **उमेश कुमार** 227
कोरोना महामारी के परिप्रेक्ष्य में संत कबीर के समाज सुधारक रूप की उपादेयता/
डॉ॰ नवनाथ गाड़ेकर/
समकालीन हिंदी कविता में अंबेडकरवादी चिंतन, **डॉ॰ संजय नाईनवाड़** 238
'उर्वशी' काव्य में चित्रित कामाध्यात्म का दर्शन : वर्तमान संदर्भ/ **रमेशचंद सैनी** 244
आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मनोविकार संबंधी निबंधों की सामाजिक दृष्टि/
सैफ रजा खान 249
काशी का अस्सी : सारांशिक रूप/ **नेहा गुप्ता** 254
सुनीता जैन द्वारा लिखित उपन्यास 'मरणातीत' : एक विश्लेषण/ **नीलम देवी** 258
मानवीय संवेदनाओं का अभाव : हृदयेश कृत 'हत्या' उपन्यास के विशेष संदर्भ में/
ज्योतिदेवी, डॉ॰ सुधारानी सिंह 263

उषाकिरण खान के उपन्यास 'गई झुलनी टूट' में लोकजीवन/ **अलका कुमारी, प्रो॰ सुचित्रा मलिक** 267
चंद्रकांता की कहानियों में पारिवार : भूमंडलीकरण के संदर्भ में/ **ए॰ निशा, डॉ॰ बी॰ कामकोटि** 271
समकालीन हिंदी कविता में दलित चेतना का सौंदर्यशास्त्र/ **प्रदीप कुमार ठाकुर** 275
उदयप्रकाश की कहानियों में सामाजिक समस्याएँ : दलित चेतना के संदर्भ में/ **मिनी॰ एस॰, डॉ॰ बी॰ कामकोटि** 279
मधु कांकरिया के कथासाहित्य में महानगरीय झुग्गी-झोपड़ी जीवन/ **ऋतु** 282
किसान जीवन की त्रासदी : 'अकाल में उत्सव' के संदर्भ में/ **मु॰ जाहिद रजा सिद्दीकी** 288
काशीनाथसिंह : कहनी उपखान के प्रथम खंड 'एक शुरुआत' की कहानियों से गुजरते हुए, **डॉ॰ (श्रीमती) निर्मला त्रिपाठी** 294
निराला की रचनाओं में राष्ट्रीयता की भावना और मुक्ति का स्वर/ **डॉ॰ उमेश कुमार पांडेय** 299
21वीं सदी हिंदी कहानी में चित्रित पारिवारिक जीवन आधुनिकता का प्रभाव : बदलती संवेदना, मूल्य व संबंध/ **रचित पांडेय, डॉ॰ क्रांतिबोध** 306
श्रीमद्भगवद्गीता में मानसिक रोग का स्वरूप एवं समाधान : एक विवेचनात्मक अध्ययन/ **मनोज रतूड़ी, डॉ॰ सुरेंद्रप्रसाद रयाल** 312
सामाजिक संगठन एवं योग/ **डॉ॰ संदीप वेदालंकार** 318
पर्यावरण अवनयन एवं मूल्यांकन और नियंत्रण के उपाय/ **अभिषेक कुमार यादव** 327
प्रवासी साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा का साहित्यिक अवदान/ **डॉ॰ योग्यता भार्गव** 333
वायुप्रदूषण और भारत/ **सुदीप पांडेय** 342
स्त्री लिंगी विमर्श और भाषा/ **डॉ॰ सोफिया राजन** 347
कबीर के काव्य में उलटबासियाँ एवं प्रतीक/ **डॉ॰ बी॰आर॰ बद्री** 351
असगर वजाहत कृत नाटक 'गोडसे/गांधी.कॉम' में वैचारिक द्वंद्व/ **सोनम सिंह** 355
डॉ॰ रमेश पोखरियाल 'निशंक' के साहित्यिक एवं राजनीतिक जीवन का समाज को अवदान/ **ममता कुँवर, प्रो॰ सुचित्रा मलिक** 359
आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के संदर्भ में हिंदी और पंजाबी के उद्भव आधार/ **सपना सैनी, डॉ॰ सुधा जितेंद्र** 365
अलका सरावगी के कथासाहित्य पर भूमंडलीकरण का प्रभाव/ **बिरारी पोपट भावराव, डॉ॰ मंजूर सैय्यद** 373
डॉ॰ परशुराम शुक्ल के बालनाटकों में मंचीयता/ **तितिक्षा जी वसावा** 376
The Concept Of Idial Teacher And His Role In Dharmashashtra/ **Jyoti god** 382
Morality In Public Life/ **Dr.Reenu Rani Mishra** 385
रामेश्वर कांबोज की साहित्यिक साधना का आलोचनात्मक विन्यास : गद्य-तरंग/ **प्रो॰ स्मृति शुक्ल** 388

 ISSN 0975-735X

निराला की रचनाओं में राष्ट्रीयता की भावना और मुक्ति का स्वर

डॉ॰ उमेश कुमार पांडेय
सहायक प्राध्यापक हिंदी
शासकीय महाविद्यालय, बलरामपुर
रामानुजगंज (छ॰ग॰)

निराला की राष्ट्रीय भावना सर्वप्रथम देशभक्ति के रूप में सामने आती है। उनकी आरंभिक रचनाओं में 'जन्मभूमि' एक देशभक्ति पूर्ण गीत है जिसमें उन्होंने पूरी विह्वलता से कहा है, 'जन्मभूमि मेरी है जगन्महरानी।' इसी भाँति अपनी रचना 'छत्रपति शिवाजी का पत्र' में निराला अँग्रेजी साम्राज्यवाद का विरोध करते हैं और जातीय एकता के बलबूते अँग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने की बात करते हैं। निराला ने केवल राजनीतिक स्वाधीनता को पाने की बात नहीं की बल्कि उनके यहाँ आर्थिक व्यवस्था की खामियाँ और जातिगत रूढ़ियों से मुक्ति का प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण है। निराला के लिए राष्ट्रीय मुक्ति का अर्थ दलितों और पीड़ितों की मुक्ति से है। शताब्दियों से अँधेरे में रखे गए लोगों को वह खुले आकाश और प्रकाश की ओर ले जाना चाहते हैं। निराला अपने गद्य साहित्य में और अधिक क्रांतिकारी एवं विद्रोही रूप में दिखाई देते हैं। उनके कथासाहित्य में बंगाल के स्वदेशी आंदोलन से लेकर पूरे राष्ट्रीय और क्रांतिकारी आंदोलन की झलक मिलती है। वे देशी-विदेशी हर प्रकार के शोषण के विरोधी हैं।

मूल शब्द–साम्राज्यवाद, स्वाधीनता, पीड़ित, वेदना, मुक्ति, शोषण, संघर्ष, अँग्रेज, आत्म गौरव, नवजागरण, मुक्त छंद।

निराला की रचनाशीलता के केंद्र में समाज का आमजन है। यही कारण है कि वे तमाम बंधनों को तोड़ते हुए सबकी मुक्ति के पक्षधर हैं। वे किसी लकीर पर चलने के हिमायती नहीं हैं, बल्कि नए रास्तों की तलाश करते हैं। वे व्यवस्था से टकराते हैं। समय के सवालों से टकराकर ही महान रचनाशीलता आकार ग्रहण करती है। जितनी शिद्दत के साथ यह चुनौती स्वीकार की जाती है, रचना की धार उतनी ही प्रखर होती है। निराला उन रचनाकारों में हैं जिन्होंने समय व समाज के सवालों के बीच से अपनी रचनात्मक तय की है। निराला की रचनाशीलता का बहुलांश स्वाधीनता संघर्ष के काल से जुड़ा हुआ है, ऐसे में स्वाधीनता विषयक चिंतन और उसके स्वरूप निराला के सृजन में मिलना नितांत स्वाभाविक है।

उन्नीसवीं शताब्दी के नवजागरण और बीसवीं शताब्दी के राष्ट्रीय आंदोलन में स्वाधीनता का अर्थ केवल राजनीतिक स्वाधीनता नहीं है। स्वाधीनता का अर्थ बहुत व्यापक है। निराला ने भी केवल राजनीतिक स्वाधीनता को पाने की बात नहीं की बल्कि उनके यहाँ आर्थिक व्यवस्था की खामियाँ और जातिगत रूढ़ियों से मुक्ति का प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण है। यह बात जरूर है कि राजनीतिक स्वाधीनता एक अनिवार्य प्लेटफार्म का कार्य करती है।

निराला की राष्ट्रीय भावना सर्वप्रथम देशभक्ति के रूप में सामने आती है। यह तथ्य महत्त्वपूर्ण है कि उनकी आरंभिक प्रकाशित रचनाओं में 'जन्मभूमि' शीर्षक (1920 में) एक देशभक्ति पूर्ण गीत है, जिसमें उन्होंने पूरी विह्वलता से कहा है, 'जन्मभूमि मेरी है जगन्महरानी'। इसी भाँति 1922 में प्रकाशित अपनी रचना 'छत्रपति शिवाजी का पत्र' में निराला अँग्रेजी साम्राज्यवाद का विरोध करते हैं और जातीय एकता के बलबूते अँग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने की बात करते हैं। निराला इस कविता के अंत में कहते हैं–

एकीभूत शक्तियों से एक हो परिवार
फैले समवेदना,
व्यक्ति का खिंचाव यदि जातिगत हो जाए
देखो परिणाम फिर
स्थिर न रहेंगे पैर
पस्त हौसला होगा
ध्वस्त होगा साम्राज्य।
जितने विचार आज
मारते तरंग हैं,
साम्राज्यवादियों की भोग वासनाओं में,
हिंदुस्तान मुक्त होगा घोर अपमान से,
दासता के पाश कट जाएँगें।[1] अपरा, निराला, पृ॰ 81

नामवरसिंह कहते हैं कि इस कविता का बाहरी रूप हिंदू पुनरूत्थान का भले ही हो, परंतु इसमें अँग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध विद्रोह तथा जातीय एकता का बीज स्पष्ट है। इस कविता तथा ऐसी ही अन्य कविताओं का जो रूप विन्यास हिंदू पुनरूत्थान से सीमित हो गया है, उसके मूल कारण भारत की तत्कालीन परिस्थितियों से उपजे हैं। अँग्रेजों की फूट डालो और राज्य करो की नीति के चलते भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण में आरंभिक समय से ही धार्मिक दरार पड़ गई, जिसके प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रभाव से उस युग के बहुत कम विचारक बच सके हैं।

'जागो फिर एक बार' कविता की दूसरी किस्त (1921) में निराला ने सांस्कृतिक परंपरा की दुहाई देकर आत्मगौरव और उद्‌बोधन का भाव जगाया है। अकाली सिक्खों के शौर्य तथा गीता की वाणी को स्मरण कराते हुए निराला कहते हैं–

शेरों की माँद में
आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार
और फिर,
मुक्त हो सदा ही तुम
बाधा–विहीन–बंद छंद ज्यों।
तुम हो महान,
तुम सदा हो महान
है नश्वर यह दीन भाव।

 ISSN 0975-735X

'तुलसीदास' (1935) में स्वाधीनता की इस भावना का पूर्ण प्रस्फुटन हुआ है। भारत के सांस्कृतिक सूर्य के अस्त होने पर देश में किस तरह अंधकार छाया हुआ है, इसका मार्मिक चित्रण करते हुए निराला ने दिखलाया है कि किस प्रकार एक कवि इस अंधकार को दूर करने की चेष्टा करता है। 'तुलसीदास' के रूप में निराला ने आधुनिक कवि के स्वाधीनता संबंधी भावों के उदय और विकास का चित्रण किया है। निराला लिखते हैं–

देशकाल के शर से विंधकर
यह जागा कवि अशेष छविधर
इसके स्वर से भारती मुखर होएगी।

(तुलसीदास, छंद 26)

इस तरह हिंदी जाति के सबसे बड़े जातीय कवि की जीवनकथा के द्वारा निराला ने अपनी समसामयिक परिस्थितियों में रास्ता निकालने का संकेत दिया है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि निराला ने अपने युग की समस्या को सुलझाने के लिए इतिहास और परंपरा का सुंदर उपयोग किया है।

पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि निराला के यहाँ स्वतंत्रता का स्वरूप बड़ा व्यापक था। उनकी स्वाधीनता की अवधारणा में देश की राजनीतिक आजादी के साथ-साथ मनुष्य की आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, धार्मिक आदि सभी प्रकार की मुक्ति का भाव निहित है। निराला के मन में राजनीतिक स्वाधीनता तो स्पष्ट थी परंतु स्वाधीन भारत का रूप क्या होगा? यह एकदम अस्पष्ट था। इसलिए निराला की कविता में गहरी वेदना भी दिखाई पड़ती है। 'राम की शक्ति पूजा' का अंत यद्यपि विजय से होता है किंतु पूरे संघर्ष के दौरान राम गहरी वेदना से गुजरते हैं। 'सरोज स्मृति' में भी निराला की वेदना बड़ी गहनता से व्यक्त हुई है–'हारता रहा मैं स्वार्थ समर'। इसी तरह 'गीतिका' के कई गीतों में भी यह वेदना स्पष्ट झलकती है। यह वेदना निराला का यथार्थ है। निराला में इस वेदना और निराशा से लड़ता हुआ एक अपराजेय भाव भी है–

वह एक और मन रहा राम का जो न थका।

और

शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन।
छोड़ दो समर जब तक सिद्धि न हो रघुनंदन।।

(राम की शक्ति पूजा)

निराला की स्वाधीन चेतना की यही शक्ति और विशेषता है कि वे छायावाद के स्वप्नलोक में खोए नहीं, यथार्थ से लगातार टकराते रहे। निराला ने जातीय श्रेष्ठता के दंभ पर भी तीखे व्यंग्य किए हैं। उत्तर भारत में श्रेष्ठ ब्राह्मण कान्यकुब्ज होते हैं। ये पाखंड की सीमा तक अपनी श्रेष्ठता के वर्चस्व को कायम रखते हैं। निराला इनके पाखंड और दुहरी जीवन पद्धति का व्यंग्यात्मक उपहास करते हैं–

ये कान्यकुब्ज कुल कुलांगार
खाकर पत्तल में करें छेद।

(सरोज-स्मृति)

निराला स्वयं कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे लेकिन समाज की मुक्ति में इस ब्राह्मणवादी संस्कृति

को बहुत बड़ी बाधा पाते थे क्योंकि यह संस्कृति पाखंड, भेदभाव पर आधारित और श्रम विरोधी है। निराला देश के भविष्य को स्पष्ट देख रहे हैं, वे श्रमिक, कारीगरों और किसानों में देश का भविष्य देखते हैं।

निराला के लिए राष्ट्रीय मुक्ति का अर्थ दलितों और पीड़ितों की मुक्ति से है। शताब्दियों से अँधेरे में रखे गए लोगों को वह खुले आकाश और प्रकाश की ओर ले जाना चाहते हैं। उन्हें साधारण जन की शक्ति और सामर्थ्य पर पूरा भरोसा है। स्वतंत्र देश के यही सच्चे प्रकाश वाहक होंगे। अगली शताब्दी इन्ही दलितों के हितों की होगी।

निराला ने अपने काव्य में लोकनायकों का सृजन किया है। इतने अधिक लोकनायक हिंदी काव्य के किसी अन्य समकालीन कवि में नहीं मिलते। उनके यहाँ रैदास हैं, झिंगुर हैं, 'तोड़ती पत्थर' की श्रमिक नारी है, इलाहाबाद का भिक्षुक है। इसके अतिरिक्त 'कुकुरमुत्ता' और 'जल्द-जल्द पैर बढ़ाओ' जैसी कविताएँ लोकहित का चिंतन करने वाली हैं। संघर्ष से ही यह पूँजी का पहाड़ टूटेगा, निराला का यह दश्ढ़ विश्वास है। निरंतर प्रहार करने से ये अज्ञेय किले भी ध्वस्त होंगें तब एक समतामूलक समाज का निर्माण होगा। इनकी मुक्ति के बिना न किसी लोकतंत्र की कल्पना की जा सकती है और न स्वाधीनता की। निराला उन्हीं साधारणजनों का आह्वान करते हैं कि अपनी मुक्ति के लिए निरंतर प्रयास करो। बिना संगठित प्रयास के मुक्ति संभव नहीं है–

साम्य रखते हुए/ विश्व जीवन से
बदले हुए कुम्हार/ नाई-धोबी, कहार
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य/ पासी, भंगी, चमार
परिया और कोल-भील/ वही आज का यह हिंदू
आज का यह मुसलमान।

स्वतंत्रता के बढ़ते हुए संघर्ष में निराला ने गरीबों का ध्यान बराबर रखा और उनका पक्ष लिया है। 'तुलसीदास' में भारत की दीन-दशा पर प्रकाश डालते हुए वे लिखते हैं–

रण के अश्वों से शस्य सकल
दलमल जाते ज्यों, दल के दल
शूद्रगण क्षुद्र जीवन-संबल, पुर-पुर में।
वे शेषश्वास, पशु, मूक भाष
पाते प्रहार अब हतश्वास,
सोचते कभी, आजन्म ग्रास द्विज गण के।
होना ही उनका धर्म परम
वे वर्णाश्रम, रे द्विज उत्तम,
वे चरण, चरण बस, वर्णाश्रम रक्षण के।

किसानों की दीन-दशा की ओर निराला का ध्यान अपने लेखन के आरंभिक वर्षों से ही रहा है। सन् 1923 में विप्लव के बादल का आह्वान करते हुए निराला कहते हैं–

रूद्ध कोष है क्षुब्ध तोष
अंगना-अंग से लिपटे भी

आतंक अंक पर काँप रहे हैं
धनी, वज्रगर्जन से बादल।
त्रस्त-नयन-मुख ढाँप रहे हैं।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर।

मुक्ति का जो व्यापक स्वरूप निराला की आँखों में था, उसकी एक झलक 'परिमल' की भूमिका में मिलती है। उसमें उन्होंने दिखाया कि मनुष्य, समाज और साहित्य की मुक्ति परस्पर संबद्ध है। मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति का अर्थ है–'कर्मों के बंधन से छुटकारा पाना' और कविता की मुक्ति का अर्थ है–'छंदों के शासन से अलग हो जाना।' छंदों के शासन से मुक्त काव्य के द्वारा साहित्य में एक प्रकार की स्वाधीन चेतना फैलती है।

निराला की स्वाधीनता या स्वाधीन चेतना का यह बहुत बड़ा प्रतीक है कि वे स्वयं निर्मित रूढ़ियों को स्वयं ही तोड़ते चलते थे। उन्होंने मुक्त छंद रचा तो फिर उससे मुक्त होकर गीत भी लिखे। जबकि निराला की अधिकांश गीत रचनाएँ छंदबद्ध हैं। गीतों के अलावा उनकी तीनों बड़ी कविताएँ–राम की शक्ति पूजा, सरोज-स्मृति और तुलसीदास छंदोबद्ध हैं। लेकिन यहाँ महत्त्वपूर्ण यह है कि निराला ने छंदोबद्धता से मुक्त छंद और फिर मुक्त छंद से भी कविता को मुक्त किया। छंद लिखा तो उसमें अपनी भाषा से मुक्त हुए। छायावादी भाषा 'गीतिका', 'अनामिका' या 'तुलसीदास' की भाषा से मुक्त होकर निराला 'कुकुरमुत्ता' और 'नए पत्ते' की नई भाषा रचते हैं। 'अणिमा' के गीतों की भाषा से बाद के गीतों की भाषा में फिर-फिर नयापन मिलता है। इसलिए सच्चे सर्जक स्वाधीन चेता कवि की पहचान तब होती है जबकि वह स्वयं अपनी बनाई हुई सृजन की जंजीरों को तोड़कर अपनी रचनात्मकता-सर्जनात्मकता का विकास करता चले। निराला की स्वाधीन चेतना आज के कवि को यह प्रेरणा देती है और इशारा करती है कि स्वयं तुम जहाँ हो, आगे बढ़ो।

निराला अपने गद्य साहित्य में और अधिक क्रांतिकारी एवं विद्रोही रूप में दिखाई देते हैं। उनके कथा-साहित्य में बंगाल के स्वदेशी आंदोलन से लेकर पूरे राष्ट्रीय और क्रांतिकारी आंदोलन की झलक मिलती है। वे देशी-विदेशी हर प्रकार के शोषण के विरोधी हैं। विदेशी साम्राज्यवाद के साथ भारतीय सामंत और जमींदार भी गरीबों, मजदूरों और किसानों इत्यादि के लिए शोषण का साधन बने हुए हैं। निराला इस संघर्षरत जनता के स्वर में स्वर मिलाते हुए दिखाई पड़ते हैं। 'चोटी की पकड़' में निराला एक क्रांतिकारी पात्र 'प्रभाकर' का सृजन करते हैं। वे स्पष्ट करते हैं कि स्वदेशी का, देशप्रेम का जितना प्रचार होगा, देशवासियों का उतना ही कल्याण होगा। इस उपन्यास में बंग-भंग एवं स्वदेशी आंदोलनों का जीवंत चित्रण ही नहीं, बल्कि यह उपन्यास देश के पहले जनांदोलन का जीवंत दस्तावेज भी है। इस उपन्यास में निराला ने देश की आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण किया है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र 'तिलक' की भाषा बोलते हैं। यथा–'अधिकार माँगे नहीं जाते, संघर्ष करके लिए जाते हैं।' बंगाल के नवजागरण पर आधारित यह उपन्यास पूरे देश के लिए एक आशा की किरण है।

निराला के अधिकांश पात्र गांधीजी की कार्यपद्धति में विश्वास नहीं रखते। केवल अहिंसात्मक आंदोलन से गरीब जनता की मुक्ति नहीं हो सकती है। वे बंगाल के क्रांतिकारियों से

बहुत प्रभावित हैं। निराला कई बार भारतीय जनता को सशस्त्र संघर्ष करके राष्ट्रीय मुक्ति का आह्वान करते हैं–

'भारतवर्ष ने जितना सहना था, सह लिया। वह समय निकल गया जब खिलौना पाकर भारत बहल जाता था। देश समझ गया है कि हाथ पर हाथ धरकर बैठने से काम न चलेगा। भारत में एक नई लहर पैदा हो गई है, नवयुवकों ने रणभेदी बजा दी है।' (निराला की साहित्य साधना, भाग-2, रामविलास शर्मा, पृ॰ 12)

क्रांतिकारी परिवर्तन की यह आकांक्षा निरंतर उनके कथासाहित्य में मिलती है। 'अप्सरा' में उन्होंने ब्रिटिश सरकार की पुलिस के कारनामों, षड्यंत्रों और असंवैधानिक क्रियाकलापों का चित्रण किया है। चंदनसिंह क्रांति के माध्यम से देश को स्वतंत्र करना चाहता है लेकिन सरकार की दृष्टि में वह एक विद्रोही से अधिक कुछ नहीं है। निराला की पूरी सहानुभूति इन क्रांतिकारियों के साथ है। निराला 'अप्सरा' में लिखते हैं–

'वास्तव में चंदनसिंह, दूसरे क्रांतिकारी ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने और जनसाधारण की सेवा करने के लिए क्रांति का मार्ग अपनाते हैं।'

निराला अपने उपन्यासों के माध्यम से देश की जनता को यह बताना चाहते हैं कि स्वतंत्रता साधारणजन के त्याग और बलिदान से मिली है। कुछ बड़े और संपन्न घरानों से आने वाले नेताओं से नहीं। निराला ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेनेवाले साधारणजन का अपनी रचनाओं में बड़े मनोयोग से चित्रण किया है। उनका बराबर यह ध्यान है कि राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन साथ-साथ होने चाहिए। वे पीड़ित और शोषित जनता की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक मुक्ति की कामना करते हैं। एक ओर 'सरफरोशी की तमन्ना' का समर्थन करते हैं, दूसरी ओर 'देश को मिल जाएँ पूँजी जो तुम्हारे मिल में है' जैसे शोषणमुक्त समाज की कल्पना करते हैं। निराला जी का यह स्पष्ट दृष्टिकोण था कि बिना जनता की सक्रिय भागीदारी के स्वतंत्रता का कोई विशेष अर्थ नहीं है।

निराला यह स्पष्ट करते हैं कि भारतीय सामंतों और शासकों की बर्बरता और उत्पीड़न के कारण भारत बार-बार परतंत्रता की बेड़ी में जकड़ता रहा है। उनके पात्र प्रभावती, जमुना, राजकुमार, वीरसिंह आदि क्रांति का संदेश देते हुए राष्ट्रीय चेतना के निर्माण का आह्वान करते हैं। जनता की गरीबी का कारण शासकों की विलासिता और उनका नकारापन है। निराला जी सत्ता के हस्तांतरण की राजनीति के विरोधी थे, वे परिवर्तन की राजनीति में विश्वास रखते थे। (प्रभावती, पृ॰ 113)

सन् 1935-36 तक आते-आते निराला का गांधी और अन्य कुलीन वर्गों से आए काँग्रेसी नेताओं और उनकी नीतियों से मोहभंग हो जाता है। इसी बीच उन्होंने अपनी प्रसिद्ध कविता 'न आए वीर जवाहरलाल' लिखी। यह कविता काँग्रेस के वर्ग चरित्र और आनेवाली स्वतंत्रता का यथार्थ रेखाचित्र है।

निराला की इस बीच की रचनाओं में भारत की मुक्ति का आह्वान है, साथ ही शोषितों और दलितों के प्रति उनकी और गहरी सहानुभूति है। वे अब सामाजिक सुधारों से सामाजिक क्रांति की बात करते हैं। धार्मिक भेदभाव, जाति व्यवस्था, नारी और दलितों का उत्पीड़न जब तक समाप्त नहीं होगा, राष्ट्रीय मुक्ति का कोई अर्थ नहीं होगा। स्वतंत्रता के प्रश्न पर वे कोई मध्यम

 ISSN 0975-735X

मार्ग नहीं चुनते। उन्हें किसान आंदोलनों से पूरी हमदर्दी है और वे अपने उपन्यासों में किसान आंदोलन का विस्तार से चित्रण करते हैं। अँग्रेज और उनके सहयोगी जमींदार किस तरह अमानुषिक अत्याचार करते हैं उनके उपन्यासों 'अप्सरा', 'चोरी की पकड़' और 'लिली' में इसका विस्तार से चित्रण है। 'अप्सरा' में जमीदारों के नैतिक पतन का चित्रण है। ब्रिटिश सरकार के चरित्र को देखकर निराला लिखते हैं–

'सभ्यता और न्याय का ढोंग रचने वाली ब्रिटिश सरकार यदि अपने हिमायती, दुष्ट, व्यभिचारी, देशी नरेशों की विलासिता और अत्याचारों को इस प्रकार छिपाने का प्रयत्न करेगी, यदि वह उनकी इच्छाओं का पूर्ण बलिदान करेगी, न्याय का गला इस प्रकार घोटेगी तो शीघ्र ही उसे सभ्य जातियों के सामने मुँह काला करना पड़ेगा। उसे इन पापों का शीघ्र ही दंड मिलेगा।' (निराला की साहित्य साधना, भाग-2, पृ॰ 20)

इस प्रकार हम देखते हैं कि निराला के रचना संसार में 'स्वाधीनता' का अर्थ बहुत व्यापक है। उनके लिए देश की राजनीतिक आजादी तो महत्त्वपूर्ण है ही, इसके साथ ही वे आमजन की हर स्तर पर मुक्ति चाहते हैं। वे एक ऐसे शोषण मुक्त समाज का स्वप्न देखते हैं जहाँ प्रत्येक व्यक्ति धार्मिक जड़ताओं और जाति-पाँति, ऊँच-नीच के भेदभाव से ऊपर उठकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सके। निराला सामाजिक समानता और न्यायपूर्ण आर्थिक व्यवस्था वाला समाज चाहते हैं। निराला ने अधिक-से-अधिक व्यापक क्षेत्र तथा प्रगतिशील सामाजिक शक्ति को अपनाने की चेष्टा की है। नामवरसिंह के शब्दों में, 'निराला के प्रयत्न से ही छायावादी कविता 'बहुजीवन की छवि' कहलाने का गौरव प्राप्त कर सकी है।' कोई भी रचनाकार एक कारण से बड़ा नहीं होता। निराला की जीवनदृष्टि बहुत व्यापक थी। उनके चिंतन में समाज का अंतिम व्यक्ति केंद्र में है इसीलिए निराला कालजयी कवि हैं।

संदर्भ

1. नामवरसिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2018
2. नामवरसिंह, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2008
3. डॉ॰ रामविलास शर्मा, निराला, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2018
4. डॉ॰ रामविलास शर्मा, निराला की साहित्य साधना, राजकमल प्रकाशन, दल्ली, द्वितीय संस्करण 1981
5. डॉ॰ रामविलास शर्मा (संपादक), राग-विराग, लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2018
6. डॉ॰ राजेंद्रकुमार (संपादक), अभिप्राय (पत्रिका), इलाहाबाद, 22वाँ-23वाँ संयुक्तांक, अक्टूबर 1999
7. डॉ॰ राजेंद्रकुमार, निराला होने का अर्थ और तीन लंबी कविताएँ, अभिव्यक्ति प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण 2010
8. दूधनाथसिंह, निराला आत्महंता आस्था, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण 2009
9. डॉ॰ रामस्वरूप चतुर्वेदी, प्रसाद-निराला-अज्ञेय, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2008
10. डॉ॰ नंदकिशोर नवल, निराला और मुक्तिबोध-चार लंबी कविताएँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2020

मो॰ 8120975244

ईमेल : umeshsumitraraj@gmail.com